बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर के 'तृतीय दीक्षांत समारोह' के अवसर पर महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन

(दिनांक–03.02.2017, समय–पूर्वाह्न 11 :00 बजे, स्थान–सबौर)

बिहार के कृषि मंत्री श्री राम विचार राय जी, केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय मणिपुर के कुलाधिपति डॉ॰ राम बदन सिंह, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर के कुलपति डॉ. अजय कुमार सिंह, प्रबन्ध बोर्ड के उपस्थित सदस्यगण, सीनेट के सदस्यगण, बिहार कृषि विश्वविद्यालय के कुलसचिव, गणमान्य अतिथिगण, अधिष्ठाता एवं निदेशकगण, नियंत्रक, सभी प्राचार्य, शिक्षक, पदाधिकारी, कर्मचारी, छात्र–छात्राएँ, प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों !

मुझे आज यहाँ बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर के 'तृतीय दीक्षांत समारोह' में उपस्थित होकर प्रसन्नता हो रही है। हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि स्व॰ सुमित्रानन्दन पंत जी की कविता की एक पंक्ति है–'भारतमाता ग्रामवासिनी।' अर्थात् भारतमाता गाँवों में बसती हैं। भारत की आत्मा उस गाँव में निवास करती है, जिसके विकास का मूलाधार कृषि है। हमारे बिहार राज्य की अर्थव्यवस्था भी लगभग पूरी तरह कृषि पर अवलंबित है। राज्य में आधुनिक कृषि के विकास में बिहार कृषि विश्वविद्यालय की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। मुझे खुशी है कि इस विश्वविद्यालय ने अपनी गुणवत्तायुक्त शिक्षा, उत्कृष्ट शोध कार्य, उन्नत कृषि–तकनीकों के प्रसार तथा कौशल–विकास के लिए आयोजित प्रशिक्षण–कार्यक्रमों की बदौलत, राज्य में ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी ख्याति प्राप्त की है। कृषि–शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु, बिहार कृषि विश्वविद्यालय को 'वैश्विक नेतृत्व पुरस्कार–2016' (Global Leadership Award-2016) से सम्मानित किया जाना शिक्षा की

गुणवत्ता का द्योतक है। मैं, इस विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ॰ अजय कुमार सिंह को 'नेशनल एजुकेशन एक्सीलैंस अवार्ड–2016' प्राप्त करने के लिए भी बधाई देता हूँ।

मुझे बताया गया है कि विश्वविद्यालय ने अपने महाविद्यालयों के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में कई उपलब्धियाँ अर्जित की है। हम सभी के लिए यह गर्व का विषय है कि इस विश्वविद्यालय में शिक्षा–प्राप्त छात्र–छात्राएँ देश तथा प्रदेश के सार्वजनिक, गैर–सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट पहचान बना रहे हैं। विश्वविद्यालय से स्नातक व स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करके, छात्र–छात्राओं ने 'भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्' द्वारा संचालित 'कनिष्ठ–अनुसंधान अध्येता' (J.R.F), 'वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता' (S.R.F) एवं 'राष्ट्रीय पात्रता जाँच' (NET) की परीक्षा में सफलता पायी है। विश्वविद्यालय के अधीन संचालित मंडन भारती कृषि महाविद्यालय, सहरसा को वर्ष 2016 में 'भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्' द्वारा मान्यता (Accreditation) प्रदान करना –अच्छी शिक्षण–व्यवस्था का द्योतक है। कृषि–शिक्षा की गुणवत्ता को सतत् जारी रखने के लिए बिहार कृषि विश्वविद्यालय ने केन्द्र सरकार द्वारा गठित 'पाँचवीं अधिष्ठाता कमेटी' को सर्वप्रथम अंगीकृत किया है। मुझे यह जानकर खुशी हुयी है कि विश्वविद्यालय ने शिक्षकों/वैज्ञानिकों, तकनीकी कर्मियों एवं अन्य कर्मचारियों को नियमानुसार प्रोन्नति प्रदान करके उन्हें प्रोत्साहित किया है।

विश्वविद्यालय ने बहुत ही कम समय में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों की व्यावहारिक समस्याओं को अपने शोध–कार्यक्रमों में सम्मिलित करके बहुत अच्छा काम किया है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि इस वर्ष राज्य सरकार की 'Variety Release Committee' ने विश्वविद्यालय के द्वारा विकसित **गेहूँ, धान, तीसी, लीची, बेल,**

मखाना आदि फसलों की 10 प्रजातियों को अपनी संस्तुति प्रदान की है, जिसमें '**भागलपुर कतरनी**' प्रभेद ने अंग क्षेत्र के गौरव को बढ़ाया है। विश्वविद्यालय द्वारा विगत अवधि में विकसित विभिन्न फसलों के **16** प्रभेदों एवं **27** उन्नत कृषि–तकनीकों ने कृषि–उत्पादन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यहाँ के वैज्ञानिकों की बौद्धिक क्षमता का ही परिणाम है कि विश्वविद्यालय में **236** से ज्यादा शोध– परियोजनाएँ चल रही हैं। मुझे खुशी है कि विश्वविद्यालय द्वारा किसानों की व्यावहारिक कृषि–समस्याओं के निराकरण हेतु **17** अखिल भारतीय, **185** राज्य स्तरीय तथा **34** अन्य विषयों की अनुसंधान–परियोजनाएँ संचालित हो रही हैं। विश्वविद्यालय के द्वारा जलवायु–परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में कृषि–प्रभेदों के अनुकूलन, उनकी परिशुद्धि सहित मोटे अनाजों तथा दलहन–तेलहन के क्षेत्र में किया जा रहा अनुसंधान कार्य काफी प्रशंसनीय है। विश्वविद्यालय के अनुसंधान कार्यो को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जाना, वैज्ञानिकों को उनके शोध–कार्य के लिए पुरस्कृत किया जाना आदि विश्वविद्यालय की अनुसंधानगत उपलब्धियों के परिचायक हैं।

कृषि के विकास में प्रसार–शिक्षा का काफी महत्व है। इस दिशा में सरकार के द्वारा संचालित योजनाओं/कार्यक्रमों ने कृषि क्षेत्र से जुड़े सभी वर्गों को जागरूक बनाने एवं सहयोग प्रदान करने का प्रयास किया है। मेरे लिए यह संतोष का विषय है कि विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि– विज्ञान–केन्द्रों द्वारा प्रदेश के किसानों के कौशल–विकास तथा रोजगार–सृजन हेतु उद्यमिता–प्रशिक्षण आयोजित किया गया है, जिसके फलस्वरूप ग्रामीण युवा स्वरोजगार हेतु उत्प्रेरित हुए हैं। विश्वविद्यालय द्वारा प्रखंड एवं पंचायत स्तर पर प्रसार– कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षित करके, सरकार की योजनाओं के क्रियान्वयन को गतिशीलता प्रदान की गई है। कृषि–तकनीकों के त्वरित स्थानान्तरण हेतु

विश्वविद्यालय ने 'वीडियो– कान्फ्रेंसिंग' के माध्यम से **60 हजार** से अधिक किसानों को प्रशिक्षित करने का उल्लेखनीय कार्य किया है।

खेत–खेती–खेतिहर को सशक्त करने तथा किसानों की आमदनी को दोगुना करने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा अनेक कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं, जिनके माध्यम से विश्वविद्यालय ने किसानों को तकनीकी ज्ञान देकर, उन्हें जागरूक करने और उनके अंदर विश्वास पैदा करने का कार्य किया है। मुझे खुशी है कि भारत सरकार के **'मेरा गाँव, मेरा गौरव'**, **'जय किसान–जय विज्ञान'**, **'राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान'**, **'कृषि शिक्षा दिवस'**, **'विश्व मृदा दिवस'** आदि कार्यक्रमों/आयोजनों के माध्यम से किसानों, विद्यार्थियों एवं आम जनता को जागरूक एवं लाभान्वित किया गया है।

मुझे जानकारी दी गई है कि विगत वर्ष बिहार कृषि विश्वविद्यालय ने भारत में पहली बार अन्तर्राष्ट्रीय उद्यान विज्ञान सोसाइटी, बेल्जियम के साथ मिलकर लीची सहित कुछ अन्य फसलों के विकास हेतु 'अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन' का आयोजन किया। साथ ही, विगत 05 दिसम्बर, 2016 को विश्वविद्यालय के मुख्यालय सहित सभी महाविद्यालयों, कृषि विज्ञान–केन्द्रों एवं अन्य संस्थानों में 'मृदा–स्वास्थ्य–दिवस' का आयोजन किया गया।

इसी प्रकार, विश्वविद्यालय द्वारा खेती को विज्ञान से जोड़ने के लिए **'जय किसान–जय विज्ञान सप्ताह'** स्वच्छता के महत्व को जन–जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से **'स्वच्छता पखवारा'** एवं कृषि शिक्षा के महत्व को प्रसारित करने हेतु **'कृषि शिक्षा दिवस'** आदि के आयोजन किये गये हैं।

प्रदेश की जनता को पोषण–सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय द्वारा अगस्त 2016 में 'अन्तर्राष्ट्रीय दलहन वर्ष' के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन करके किसानों/प्रसार

कार्यकर्ताओं, वैज्ञानिकों, छात्रों सहित सभी लोगों को जागरूक बनाया गया है। दलहनी–तेलहनी फसलों के उत्पादन/उत्पादकता को बढ़ाने हेतु **1500 हेक्टयर** क्षेत्रफल में तेलहनी फसलों का प्रत्यक्षण तथा **3600 हेक्टेयर** क्षेत्रफल में दलहनी फसलों का प्रत्यक्षण कराते हुए किसानों को लाभान्वित किया गया है। इसी कड़ी में भारत सरकार की सहायता से राज्य के किसानों को दलहन–तेलहन फसल के गुणवत्तापूर्ण बीज उपलब्ध कराने हेतु विश्वविद्यालय द्वारा **04 सीड हब** की स्थापना प्रशंसनीय है। मुझे विश्वास है कि आने वाले समय में हमारे किसान भाई–बहन बड़ी मात्रा में दलहनी एवं तेलहनी फसलों का उत्पादन करके देश–प्रदेश को पोषण–सुरक्षा प्रदान करेंगे।

'दीक्षांत समारोह' के पावन अवसर पर विश्वविद्यालय के उन सभी विद्यार्थियों को मैं बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ, जिन्होंने आज उपाधि और मेडल प्राप्त किया है। मैं आशा करता हूँ कि आप अपने ज्ञान और कौशल से देश–प्रदेश की खेती का विकास करने में सफल होंगे। मैं आज कार्यक्रम में उपस्थित सभी विद्यार्थियों, सभी शिक्षकों एवं अभिभावकों को भी बधाई देता हूँ।

मुझे विश्वास है कि कृषि–जगत् की वर्तमान अपेक्षाओं के मापदण्ड पर यह विश्वविद्यालय पूरी तरह खरा उतरेगा और भारत की दूसरी 'हरित क्रांति' में उत्तर भारत, विशेषतः बिहार राज्य के योगदान को महत्त्वपूर्ण और उल्लेखनीय बना पायेगाा। इस 'दीक्षांत समारोह' के सफल आयोजन हेतु मैं बिहार कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति, कुलसचिव सहित समस्त विश्वविद्यालय–परिवार को बधाई देता हूँ।

जय हिन्द !!

***